शिक्षा में गुणवत्ता व शिक्षक के कर्तव्य

भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक महान गुरु शिक्षक रहे हैं, ऐसे गुरु हुए है जिनके आशीर्वाद और शिक्षा के कारण इस देश को महान युग नायक मिले। कण्व, भारद्वाज, वेदव्यास, अत्रि से लेकर वल्लभाचार्य, गोविंदाचार्य, गजानन महाराज, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि सभी अपने काम के महान गुरु थे।

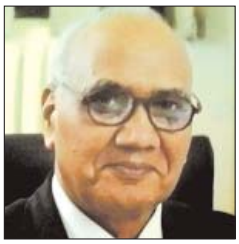

डॉ0 भरत राज सिंह

भारतवर्ष में महान शिक्षाविद डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती को हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देशभर में बच्चों द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर भविष्य रोशन करने की तमाम कलाएं प्रस्तुत की जाती है। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनके पहले भी भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक शिक्षक रहे हैं। राम से लेकर विवेकानंद तक जितने भी युगनायक हुए हैं, उनके पीछे किसी महान गुरू का आशीर्वाद और शिक्षा रही है। शिक्षण विधि तो आदि काल से चली आ रही है तथा हमारे पौराणिक ग्रंथों में गुरु–शिष्य परंपरा का जिक्र है।

1–गुरुकुल पद्धति

प्राचीनकाल में जब विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करता था तो इसी दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर अपने गुरु का पूजन करके उन्हें अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर कृतकृत्य होता था। देवताओं के गुरु थे बृहस्पति और असुरों के गुरु थे शुक्राचार्य। भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक महान गुरुशिक्षक रहे हैं, ऐसे गुरु हुए है जिनके आशीर्वाद और शिक्षा के कारण इस देश को महान युग नायक मिले। कण्व, भारद्वाज, वेदव्यास, अत्रि से लेकर वल्लभाचार्य, गोविंदाचार्य, गजानन महाराज, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि सभी अपने काम के महान गुरु थे।

रामायणकाल में अर्थात् जब राजा दशरथ जी के चार पुत्र हुए तो उनके राज्य में बहुत खुशियां मनाईं गयी क्योंकि इनका जन्म राजा दशरथ के द्वारा बहुत पूजा पाठ के बाद हुआ था, जब वह अपने जीवन के चौथेपन पर पहुंच रहे थे। ऐसी दशा में राजा दशरथ अपने इन बच्चों को एक पल भी अपने से अलग नहीं करना चाहते थे।

गुरु वशिष्ठ – राजा दशरथ के कुल गुरु ऋषि वशिष्ठ को कौन नहीं जानता। ये दशरथ के चारों पुत्रों के गुरु थे। त्रेतायुग में भगवान राम के गुरु रहे थी वशिष्ठ भी भारतीय गुरुओं में उच्च स्थान पर हैं। भगवान राम की प्रतिभा और उनके सद्व्यवहार को सबसे पहले श्री वशिष्ठ ने ही पहचाना। उन्होंने भगवान राम के व्यक्तित्व को देखते हुए पहले ही घोषणा कर दी थी कि इन्हे भविष्य में सूर्यवंश राम के नाम से ही जाना जाएगा। धर्म के मार्ग पर चलने वाल भगवान राम ने अपने तीनों भाइयों के साथ सारी वेद–वेदांगों की शिक्षा वशिष्ठ ऋषि से ही प्राप्त की थी।

गुरु विश्वामित्र– विश्वमित्र वन में राक्षसों द्वारा मचाए जा रहे उत्पात को समाप्त करने के लिए महाराज दशरथ का दरबार पहुंचे। बोले 'हे राजन! मैं आपसे ज्येष्ठ पुत्र राम को मांगने के

लिए आया हूँ ताकि वह मेरे साथ जाकर राक्षसों से मेरे यज्ञ की रक्षा कर सके और मेरा यज्ञानुष्ठान निर्विध्न पूरा हो सके। गुरु वशिष्ठ ने राजा को समझाया कि महामुनि अत्यन्त विद्वान, नीतिनिपुण और अस्त्र–शस्त्र के ज्ञाता हैं। इनके साथ रह कर शस्त्र और शास्त्र विद्याओं में और भी निपुण हो जायेंगे तथा उनका कल्याण ही होगा। इस प्रकार भगवान राम को परम योद्धा बनाने का श्रेय विश्वमित्र ऋषि को जाता है। एक क्षत्रिय राजा से ऋषि बने विश्वमित्र भृगु ऋषि के वंशज थे। विश्वामित्र को अपने जमाने का सबसे बड़ा आयुध अविष्कारक माना जाता है। उन्होंने ब्रम्हा के समकक्ष एक और सृष्टि की रचना कर डाली थी।

सांदीपनि– भगवान श्रीकृष्ण के गुरु आचार्य सांदीपनि थे। उज्जैयिनी वर्तमान में उज्जैन में अपने आश्रम में आचार्य सांदीपनि ने भगवान श्रीकृष्ण को 64 कलाओं की शिक्षा दी थी। भगवान विष्णु के पूर्ण अवतान श्रीकृष्ण ने सर्वज्ञानी होने के बाद भी सांदीपनि ऋषि से शिक्षा ग्रहण की और ये साबित किया कि कोई इंसान कितना भी प्रतिभाशाली या गुणी क्यों न हो, उसे जीवन में फिर भी एक गुरु की आवश्यकता होती ही है। भगवान श्रीकृष्ण ने 64 दिन में से कलाएं सीखीं थी। सांदीपनि ऋषि परम तपस्वी भी थे, उन्होनें भगवान शिव को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त किया था कि उज्जैयिनी में कभी अकाल नहीं पडेंगा।

द्रोणाचार्य– द्वापरयुग में कौरवों और पांडवों के गुरु रहे द्रोणाचार्य भी श्रेष्ठ शिक्षकों की श्रेणी में काफी सम्मान से गिने जाते हैं। द्रोणाचार्य ने अर्जुन जैसे योद्धा को शिक्षित किया, जिसने पूरे महाभारत युद्ध का परिणाम अपने पराक्रम के बल पर बदल दिया। द्रोणाचार्य अपने युग के श्रेष्ठतम शिक्षक थे।

चाणक्य– आचार्य विष्णु गुप्त यानी चाणक्य कलयुग के पहले युगनायक माने गए हैं। दुनिया के सबसे पहले राजनीतिक षड्यंत्र के रचयिता आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य जैसे साधारण भारतीय युवक को सिकंदर और धनानंद जैसे महान सम्राटों के सामने खड़ाकर कूटनीतिक युद्ध कराए। चंद्रगुप्त मौर्य को अखंड भारत का सम्राट बनाया। पहली बार छोटे–छोटे जनपदों और राज्यों में बंटे भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य आचार्य चाणक्य ने किया था। वे मूलतः अर्थशास्त्र के शिक्षक थे लेकिन उनकी असाधारण राजनीतिक समझ के कारण वे बहुत बड़े रणनीतिकार माने गए।

रामकृष्ण परमहंस– स्वामी विवेकानंद के गुरु आचार्य रामकृष्ण परमहंस भक्तों की श्रेणी में श्रेष्ठ माने गये हैं। मां काली के भक्त श्री परमहंस प्रेममार्गी भक्ति के समर्थक थे। ऐसा माना जाता है कि समाधि की अवस्था में वे मां काली से साक्षात वार्तालाप किया करते थे। उन्हीं की शिक्षा और ज्ञान से स्वामी विवेकानंद ने दुनियां में भारत को विश्वगुरू का परचम दिलाया। हम भारतीयों को गर्व होना चाहिए। साथ ही इनकी कहानियां बच्चों को सुनानी चाहिए। जिसे परंपराओं के साथ–साथ रौनक भी बरकरार रहे।

अच्छे शिक्षक बनने हेतु गुण

आज के इस भौतिक वादी युग में शिक्षा की गुणवत्ता का जिसमें शैक्षणिक योग्यता व अंकों की महत्ता केवल 15 प्रतिशत तथा नैतिकता विकास कार्य सम्पादित करने के सामर्थ्य पर 85 प्रतिशत का सेवायोजक संस्थानों द्वारा दिया जा रहा है अतः शिक्षण में कौशल विकास व रवैया का पाठ बहुत जरूरी है।

सफलता की कुंजी

उत्साह– किसी भी कार्य करने में उत्साह जरूरी है। जैसे बचपन में बच्चों को पार्क ले जाने की बात पर वह पूरे दिन उत्साहित रहता है।

चमक–किसी भी कार्य में सफलता मिलते भी चेहरे पर चमक आ जाती है हमें यह चमक शिष्य में पैदा करनी होगी।

लक्ष्य– प्रत्येक कार्य का लक्ष्य जरूरी निर्धारित होना चाहिए, भले छोटा ही क्यों न हो, यह गुण शिष्य में डालें व छोटे–छोटे लक्ष्य निर्धारित कर सफलता की सीढ़ी चढने का अभ्यस्त होगा।

प्रचार– अच्छे कार्य करने के गुण को शिष्य को उत्साहित करना चाहिए कि दूसरो को भी बताएं। इससे उसमें अधिक उत्साह व चमक उत्पन्न होगी।

कार्य में अवरोध

कार्य करने में बहुत सी रूकावटे आती है जैसे –

मायूसी– किसी भी कार्य की असफलता पर मायूसी आती है, इससे आगे कार्य करने में सुविधा मिलती है अतः इसका अच्छा पहलू ग्रहण करना चाहिए।

असंतोष–कार्य पूर्ण न होने व अच्छे से न होने में यह महसूस होता है परन्तु आगे के कार्य हेतु शिक्षा मिलती है।

झुझलाहट– कार्य मन से किया, गुणवत्ता सही नही रही। आगे इस पर विशेष ध्यान देना है।

एकांत– असफल व कार्य संपादन में देरी। यह भविष्य में सुधार हेतु मौका है, सफलता अवश्य मिलेगी।

उक्त छोटी–छोटी बातें ध्यान में रखकर यदि बच्चों में अच्छी शिक्षा का विकास करेंगें तो आपका शिष्य आगे बढ़ेगा और उसकी सफलता से आपका भी नाम ऊंचा होगा। आइए शिक्षक के दायित्व का निर्वहन करते हुए अच्छे शिष्य बनाने में व राष्ट्र व विश्व को अग्रणी दिशा देने में सहयोग करें तथा शिक्षक को कर्तव्यों के प्रति जागृत होने का शपथ लें।

2–स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय पद्धति

कलियुग मे भी गुरु चाणक्य व महर्षि राम कृष्ण परम हंस द्वारा भी शिक्षा अपने शिष्यों को आश्रम मे ही देने का जिक्र मिलता है परन्तु समय की मांग व आर्थिक युग के पदार्पण से शिक्षा भी व्यवसायिक रूप ग्रहण कर ली और सभी नगरों व कस्बों मे स्कूल व कॉलेज खोल कर शिक्षा का ज्ञान दिया जाने लगा। इस व्यवस्था में हम बड़े–छोटे व ऊंच–नीच की भावना से उबर नहीं पा रहे है और न ही शिक्षा के ज्ञान को सही रूप मे दिया जा रहा है।

शिक्षण व्यवस्था पर विचार

प्रश्न उठता है कि इस भौतिकवादी व्यवस्था में क्या हम पुराने शिक्षण प्रणाली को लागू कर सकते है। शायद यह संभव नहीं है क्योंकि त्रेता व द्वापर युग की व्यवस्था हेतु त्याग की भावना सर्वोपरी रही है। जबकि आज का शिक्षक अपनी सेवा को ही दूसरी सेवाओं के पदो ंके सापेक्ष नीचा मानता है और शिक्षण सेवा को अंतिम विकल्प पर रखता है। क्या इसमें सरकार व शासन को इस व्यवस्था के लिए जिम्मेदार माना जाए। मेरे विचार से यह सही नहीं होगा। समाज में शिक्षकों के स्तर बढ़ाने की जरूरत है जिनमें नैतिकता का विकास पहले बहुत जरूरी है।

डॉ० भरत राज सिंह जो स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक है, का मानना है कि किसी देश के विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। ऐसे मे हमें शिक्षण व्यवस्था में गुरुजन जिन्हें अनुभव है व वरिष्ठ हैं, वह चाहे जिस क्षेत्र से सेवानिवृत हो, समाज व राष्ट्र हित में वीणा उठाये कि वह अच्छे शिक्षक तैयार करेंगे। उनमें नैतिकता का विकास सर्वोपरि करेंगे। फिर शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने की बात की जाय। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अच्छे अंक, सर्टिफिकेट अथवा डिग्री दे सकता है, जो किसी भी अच्छे सेवायोजक की न्यूनतम आवश्यकता मानी जा सकती है, परन्तु उसमें नैतिकता का विकास नहीं होगा तो वह उस सेवायोजक के यहां पहले तो नौकरी नहीं पा सकता है। यदि वह नौकरी पा भी गया तो कार्यकुशलता के अभाव में कुछ ही दिनों में अयोग्य घोषित होकर निकाल दिया जायेगा।

वर्तमान शिक्षण व्यवस्था पर दो उदाहरण

पहला– रिओ में सिल्वर पदक पाने वाली मिस पीवी सिन्धु। उसमें क्या योग्यता पाई गयी। उसने गुरु शिष्य परम्परा का पूर्ण निर्वहन करते हुए भौतिकता से दूर रह कर, अपने गुरु के दिशा निर्देश में समर्पण भाव से शिक्षा प्राप्त किया। लक्ष्य एक ही था कि अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर खेल को उच्च स्तर पर पहुंचाना। तीन माह से मोबाइल फोन भी गुरु ने अपने पास रख लिया जिससे उसका ध्यान खेल के अलावा कहीं न भटके। ऐसे शिक्षक–शिष्य को पूर्ण भारत ने सलाम किया। यही शिक्षा का स्तर हमारे भारत वर्ष में त्रेता व द्वापर युग में भी था, जब माँ–बाप अपने बच्चों को गुरु कुल में गुरु को समर्पित कर पूर्ण शिक्षा की अभिलाषा की कामना करते थे।

दूसरा– हमारे सैनिक जो किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो, वह राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत होकर अपने दुश्मनों के छक्के छुड़ा देता है। सलाम है ऐसे सैनिक शिक्षकों व शिष्यों को जो देश के लिए अपने को नैतिकता का पाठ इस कदर पढ़ाते है कि सैनिक अपने पूर्ण समर्पणभाव व ताकत के साथ लड़ाई करते हुए कुर्बानी तक दे डालता है। यह भी ट्रेनिंग गुरुकुल परम्परा का जीता जागता उदाहरण है।

(लेखक स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज लखनऊ में निदेशक हैं)